ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-11* February-2021
Anthology : The Research

टैबू से बाहर निकलता फैशन

Fashion Breaks Out of Taboo

Paper Submission: 15/02/2021, Date of Acceptance: 26/02/2021, Date of Publication: 27/02/2021

शालिनी आल्हा
सहायक आचार्य
गृह विज्ञान विभाग,
चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर राजस्थान, भारत

सारांश

सृष्टि में मनुष्य ही एक मात्र प्राणी है जिसमें सौन्दर्य बोध होता है और इस सौन्दर्य बोध के चलते वह स्वयं को विभिन्न साधनों से सजा कर सुन्दर बनाता है। मानव सभ्यता के इतिहास पर नजर डाले तो प्रत्येक काल में स्त्री व पुरूष ने अलग–अलग तरह से इन साधनों का इस्तेमाल किया है जैसे प्रकृति में उपस्थित विभिन्न फूलों व पेड़ों से प्राप्त रंगों से वह स्वयं को सुन्दर दिखाता रहा है। सुन्दरता की इस राह में महिलाओं और पुरूषों के लिए समाज में अलग–अलग मापदण्ड निर्धारित किये गये, जिनके अनुसार कुछ चीजें पुरूष ही इस्तेमाल कर सकते थे और कुछ केवल महिलाओं के लिए थी। इसी तरह कुछ वस्तुएं विपरीत लिंग के लिए प्रतिबंधित भी की गई।

Man is the only creature in the world that has a sense of beauty and Due to this aesthetic sense, he beautifies himself by various means. If we look at the history of human civilization, in every era, men and women have used these tools in different ways for example He has made himself look beautiful with the colors obtained from various flowers and trees present in nature. In this path of beauty, different criteria were set for women and men in the society, according to which some things could be used by men and some were only for women. Similarly, some items were also banned for the opposite sex.

मुख्य शब्द : फैशन, टैबू, सौन्दर्य बोध, रेटिक्यूल, ब्रांड।
Fashion, taboo, aesthetic sense, reticule, brand.

प्रस्तावना

फैशन शब्द अपने आप में अत्यन्त विस्तृत है। यह न केवल परिधान से संबंध रखता है, अपितु उसके साथ इस्तेमाल होने वाली सहायक सामग्री को अपने में समाए हुए है। उदाहरण के लिए पर्स, जूते, सौन्दर्य प्रसाधन, केश सज्जा, आभूषण इत्यादी फैशन में आते है।

फैशन एक बहुत आयामी क्षेत्र है यह ना केवल हमारे वर्तमान के दैनिक जीवन में परिलक्षित होता है बल्कि हमारे भूतकाल में भी देखा जा सकता है। इतिहास के प्रत्येक काल में मनुष्य ने अपने आप को सुन्दर दिखाने के लिए बहुत से साधनों का इस्तेमाल किए है और ये साधन उस काल विशेष के फैशन को दर्शाते हैं। प्रत्येक काल में लोगों के पहनावे में, उनके रहन–सहन में अन्तर देखा जा सकता है। पहनावे में आने वाला यह अंतर अचानक नहीं आता बल्कि कुछ बदलावों के साथ धीरे–धीरे आता है। उदाहरण के लिए कुर्ते की लम्बाई कम या ज्यादा होना, पेंट के मोहरी छोटी या बड़ी होना इत्यादी।

टैबू का अभिप्राय निषेध, पाबंदी या प्रतिबंधित करने से है। यह एक प्रकार का सीमित दायरा है जो लगभग सभी समाजों में मौजूद है। किसी एक समाज या संस्कृति में किसी वस्तु या पदार्थ को वर्जित किया जा सकता है, परन्तु यह जरूरी नहीं कि अयोग्य घोषित वस्तु दूसरे समाज द्वारा स्वीकार्य नहीं होगी। कभी–कभी यह देखा जाता है कि एक संस्कृति में निषेध वस्तु अन्य संस्कृति में बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा न केवल पसंद की जाती है बल्कि अपनाई भी जाती है।

परिधान के संदर्भ में जब टैबू की बात करते हैं या फिर फैशन को जब टैबू के साथ जोड़कर देखते हैं तो पाते हैं कि अलग–अलग समय में बहुत सी वस्तुएं लोगों द्वारा पसंद की गई थी जो कुछ समय के पश्चात् उनके द्वारा प्रतिबंधित कर दी गई और अब वर्तमान में उनमें से कुछ फिर से नये प्रारूप में

लोगों द्वारा अपनाई जा रही है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख में परिधान के परिपेक्ष में (एतिहासिक दृष्टि डालते हुए) यह जानने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार कुछ वस्तुए जो वर्तमान में महिलाओं की पहचान बन गई हैं और पुरूष उनसे दूर रहते है, वास्तविक रूप में वे पुरूषों द्वारा ही इस्तेमाल होनी शुरू हुई थी।

विधि

वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत पत्र में द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है।

प्रत्येक समाज में लिंग के आधार पर महिलाओं और पुरूषों के पहनावें में अन्तर रखा गया है। और यदि कोई व्यक्ति अपने द्वारा निर्धारित दायरे से बाहर जाकर कोई परिधान अपनाता है तो समाज उसे भिन्न दृष्टि से देखता है फैशन के इतिहास में कुछ ऐसी वस्तुएं देखी जा सकती है जो वर्तमान में महिलाओं की पहचान बन चुकी है, परन्तु असल में उन्हे पुरूषों के लिए बनाया गया था ।

लिंग के आधार पर रंग विभाजन

लिंग के आधार पर यदि रंगों का विभाजन देखें तो नीला रंग पुरूषों के लिए तथा गुलाबी रंग महिलाओं के लिए जाना जाता है। इतिहास में गुलाबी रंग लड़कों द्वारा इस्तेमाल किया जाता था। दरअसल 19वीं सदी से पहले गुलाबी रंग युद्ध और शौर्य का प्रतीक रहा। पुराने रोमन साम्राज्य में अफसरों के हेलमेट और कपड़े गुलाबी रंग के होते थे। सन् 1794 में एक किताब लिखी गई '' ए जर्नी राऊंड माय रूम'' जिसमें लेखक के द्वारा लिखा है कि पुरूषों के कमरे में गुलाबी रंग की पेंटिंग और वस्तुएं होनी चाहिए, क्योंकि इससे उनमें उत्साह बढ़ता है।

प्रथम विश्व युद्ध के समय कई नये रोजगार बने जिन्हे रंगों के आधार पर विभाजित किया गया, जैसे : पढ़े–लिखे समाज के लिए सफेद कॉलर (ऑफिसर पद), मजदूरों के लिए नीली कॉलर निर्धारित किया गया। परन्तु टाईपिस्ट, सैक्रेटरी, वेटर और नर्स जैसी नौकरियां इन दोनों कॉलर के तहत नहीं आती थी, इसलिए इन्हें पिंक कॉलर जॉब कहा गया। इन नौकरियों में तरक्की एक सीमा तक ही हो सकती थी, इसलिए ये महिला प्रधान मानी गई । इसके बाद धीरे–धीरे पुरूषों के वस्त्रों में गुलाबी रंग कम होने लगा और पुरूषों ने गुलाबी रंग से दूरी बनाना शुरू कर दिया। और गुलाबी रंग महिलाओं की पहचान बन गया।

वर्तमान परिपेक्ष्य में देखें तो पाते है कि आज परिधान में रंग, लिंग के बंधनों से कुछ हद तक मुक्त हो गया है। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक पुरूष हर तरह के रंग के वस्त्र पहने हुए देखे जा सकते है। हर काल खंड में पुरूषत्व को प्रदर्शित करने के लिए उन्हें विशेष रंग में बांधा गया था। परन्तु वर्तमान में ऐसा नहीं है। आज बाजार में सैकड़ों परिधान से सबंधित ऐसे ब्रांड हैं जो पुरूषों के वस्त्रों में हर रंग का इस्तेमाल करते है। आज न केवल दैनिक इस्तेमाल के वस्त्र रंग के बंधन से मुक्त है बल्कि समारोह जैसे : शादि, पार्टी या अन्य सामाजिक समारोह में पुरूषों को विभिन्न रंगों के परिधानों में देखा जा सकता है। परन्तु औपचारिक समारोह में रंगों पर प्रतिबंध आज भी देखा जा सकता है। रंग मानव की मनोस्थिति को दर्शाते है ये ना केवल प्रसन्नता और उल्लास को प्रदर्शित करते है बल्कि रंगों के माध्यम से मनुष्य अपना दुख भी प्रकट करता है। रंग हमारी संस्कृति से भी जुड़े हुए हैं जैसे – 'राजस्थानी संस्कृति में पीले, लाल व हरे रंग की प्रधानता मानी जाती है।' यहां पर रंगों को शुभ शकुन और अपशकुन से भी जोड़ा गया है, उदाहरण के लिए लाल व गुलाबी रंग शुभ शकुन का प्रतीक है जबकि काला, भूरा व स्लेटी रंग अशुभ के संकेत देते है। इसलिए विवाहित स्त्री के लिए ये रंग प्रतिबंधित माने जाते है। इस तरह ज्योतिष विद्या के साथ भी रंग को जोड़ा गया है और राशि के अनुसार रंग को ग्रहण करना या प्रतिबंधित किया गया है।

पर्स का इस्तेमाल

पर्स के इतिहास की बात करें तो यह सदियों पुराना है। सबसे पुराना ज्ञात पर्स 5000 वर्ष से अधिक पुराना है। उस समय पहने जाने वाले परिधानों में जेब नहीं होती थी। इसलिए छोटे पाउच बनाए गये ताकि इसमें पैसे (सिक्के) सुरक्षित रखे जा सके। पुरूष इसे बेल्ट में फसाकर रखते थे। उस समय महिलाएं घर पर ही रहती थी इसलिए उन्हे पर्स की जरूरत नहीं थी, लेकिन वे जरूरी चाबियां एक गुच्छे में फसा कर अपने परिधान में लटका लिया करती थी।

लगभग 18वीं सदी में महिलाओं ने इसका इस्तेमाल करना छोड़ दिया और रेटिक्यूल अपना लिया। रेटिक्यूल एक छोटा पाउच था, जिसे डोर से संभाला जाता था। इस प्रकार महिलाओं का फैशन छोटे सजावटी पर्स से आगे बढ़ते हुए हैण्डबैग की और विकसित हुआ तो पुरूषों का फैशन दूसरी दिशा में आगे बढ़ा। इसके बाद धीरे–धीरे पुरूषों और महिलाओं के पर्स की बनावट में बदलाव आने लगा। यद्यापि पर्स के इस्तेमाल की शुरूआत पुरूष वर्ग के द्वारा की गई थी, जिसे बाद में महिलाओं ने भी अपनाया। वर्तमान में पर्स महिला व पुरूष दोनों द्वारा इस्तेमाल किए जाते है। परन्तु इसकी बनावट अलग–अलग हो गई है।

ऊँची एडी के जूते

वर्तमान में ऊँची हील्स वाली सैन्डिल महिलाओं का फैशन जरूर बन चुकी है लेकिन उन हील्स को पहनने की शुरूआत महिलाओं द्वारा नहीं बल्कि पुरूषों द्वारा की गई थी। ऊँची एडी के जूतों ने दशकों तक बहुत से कारणों से विश्व के अलग–अलग हिस्सों में पुरूष सैनिकों, अभिजात और यहां तक की राजघरानों के पुरूषों में अपना स्थान बनाए रखा। यदि हम इसके इतिहास की बात करें तो सन् 1679 में फ्रांस के एक राजा लुई 14 का जिक्र आता है। वे एक महान शासक थे जिनकी लम्बाई केवल पांच फुट चार इंच थी। अपने कद की कमी पूरी करने के लिए उन्होने दस इंच ऊँची हील्स के जूते बनवाए । हालांकि ऊँची हील्स के इतिहास में कई कहानियां प्रचलित हैं। 17वीं शताब्दी की शुरूआत् में अब्बास महान के दूतों द्वारा ऊँची हील्स के जूते यूरोप में लाए गये जिन्हे उच्च श्रेणी के पुरूषों द्वारा पहना गया। संभ्रांत लोगों ने ऊँची एडी के जूते अपने को निम्न वर्ग से

अलग करने और खुद को ऊँचा बनाने के लिए भी अपनाए। क्लाउस कार्ल ने अपनी पुस्तक 'शूज' मे पुरूषों के जूतों की हील्स की लम्बाई को कैसे उनकी रैंक के अनुसार निर्धारित किया गया इसके बारे में लिखा है जैसे – आम व्यक्ति के लिए 1 इंच वहीं रईस व राजसी लोगों के लिए 2 इंच जूतों की हील्स की लम्बाई रखी गई।

10वीं से 15वीं शताब्दी में फारस में भी ऊँची हील्स के जूते पुरूषों द्वारा धारण किये गये। पर्शियन सैनिक ऊँची हील्स इसलिए पहनते थे ताकि घुड़सवारी करते समय अपने पैर रकाब में असानी से फंसा सके और साथ ही तीरंदाजी में सही निशाना साध सके।

इसके बाद महिलाओं ने भी अपना कद बढ़ाने के लिए ऊँची हील्स पहनना शुरू कर दिया। दक्षिण भारत में तेलंगाना में रामलिंगेश्वर मंदिर में स्त्रियों की कई मूर्तियां है। इन 800 वर्ष से पूरानी मूर्तियों के पैरों पर ऊँची हील्स बनी हुई है। वर्तमान में ऊँची हील्स के जूते महिलाओं के लिए फैशन का प्रतीक बना गया है। महिलाओं के फैशन परस्त पहनावे में ऊँची हील्स आवश्यक अंग हो गई है। यह ना केवल लम्बाई बढ़ाने के लिए बल्कि सुरूप दिखाने के लिए भी पहनी जाती है।

श्रृंगार प्रसाधन का इस्तेमाल

मनुष्य द्वारा आदिकाल से अपने आप को सुन्दर दिखाने के लिए श्रृंगार का इस्तेमाल किया गया है। विभिन्न प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल चेहरे व शरीर के बाकी हिस्सों पर किया जाता था। प्राचीन मिस्र की संस्कृति में पुरूषत्व महत्वपूर्ण था। यहां 4000 वर्ष पूर्व पुरूषों ने काले रंग का उपयोग आंख पर ''कैट आई'' की आकृति बनाने के लिए किया था। कुछ सालों बाद कोहल आई लाईनर, हरे मैलाकाइट आई शैडो और लाल गेरू को होंठ और गालों पर लगाना भी लोकप्रिय हो गया था। पहली शताब्दी ई.पू. में रोमन पुरूष अपने गालों पर ब्लश और पाउडर लगाकर त्वचा सुन्दर बनाते थे। जानवरों की वसा और रक्त का इस्तेमाल नाखूनों को रंगने के लिए करते थे। इसके अलावा कैरमाइल बीटल और मिश्रित मिट्टी को पानी में मिला कर होठों को रंगा जाता था। वही महारानी एलिजाबेथ प्रथम के शासन के दौरान भी मेकअप (श्रृंगार) पुरूषों के बीच काफी लोकप्रिय था। इतना ही नहीं 18वीं शताब्दी में फ्रांस के राजा लुईस सोलहवें द्वारा मेकअप और नकली बाल का इस्तेमाल किया गया था। इसी प्रकार देखा जाये तो पुरूषों के द्वारा स्वयं को सुन्दर दिखाने के लिए सौन्दर्य प्रसाधन का इस्तेमाल पहले किया गया, बाद में महिलाओं ने भी इनका उपयोग किया।

वर्तमान समय में देखें तो श्रृंगार प्रसाधन उद्योग न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व भर में बहुत फल–फूल रहा है। इसके पीछे का कारण इतना सा है कि आज महिलाओं द्वारा इसकी बहुत मांग है और न केवल महिलाएं बल्कि पुरूषों द्वारा इस्तेमाल प्रसाधन भी अलग से तैयार किए जाते हैं। कुछ समय पहले तक श्रृंगार प्रसाधन केवल महिलाएं ही उपयोग में लाती थी और पुरूष अपने पुरूषत्व के कारण इनसे दूर ही रहते थे। अब समय फिर से बदल रहा है, और बाजार में पुरूषों के लिए भी सौन्दर्य प्रसाधन की भरमार है पुरूषों का एक बहुत बड़ा समुह इन प्रसाधनों का इस्तेमाल अपने को सुन्दर दिखाने के लिए कर रहा है।

निष्कर्ष

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि अलग–अलग काल में पुरूष व महिलाओं द्वारा परिधान का चयन अलग–अलग मानकों पर आधारित था। एक समय में परिधान या परिधान की सहायक सामग्री पुरूष उपयोग में लाता था वह महिलाओं के लिए प्रतिबंधित थी। वर्तमान में वही सामग्री फैशन परस्त लोगों के लिए आवश्यक हो गई है। टैबू यानि की प्रतिबंधन के बंधनों से मुक्त वर्तमान समाज में महिलाओं व पुरूषों के लिए बाजार में सैंकड़ो ब्राण्ड है जो कि उनकी पसंद के अनुसार उन्हें सामग्री प्रदान करवाते है। इसी प्रक्रिया को यदि सामाजिक परिवर्तन के दृष्टिकोण से देखें तो परिवर्तन की यह गति व दिशा एक चक्र की भांति होती है, अतः सामाजिक परिवर्तन जहां से आरम्भ होता है, अंत में घूम कर फिर वहीं पहुंचता है। इसी प्रकार परिधान के इतिहास में भी बहुत से परिधान (वस्त्र) कुछ न कुछ परिवर्तन के साथ फिर से अपनाए जाते हैं और फैशन में आ जाते हैं। यह चक्र बार–बार दोहराता रहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दैनिक भास्कर, मधुरिमा 09.12.2020*
2. *www.marriam-webstar.com*
3. *The History of handbags- a 5- minute guide.*
4. *High Heeled shoes were originally created for man/teen vouge.*
5. *www.bhcosmetics.com*
6. *Em.m.wikipedia.org.*
7. *Carl kohleer Dover, Fashion and costumes : A history of inc.1963*
8. *Hkkjrh; lekt Indian Socity, एम. एल. गुप्ता व डॉ. डी. डी. शर्मा साहित्य*
9. *भवन पब्लिकेशन्स*